ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

प्रेमचंद कश्यप 'सोज़' के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व का अनुशीलन

पूर्णिमा अग्रवाल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
सदर बाजार, गंज,
अम्बाह, मुरैना

सारांश

प्रेमचंद कश्यप 'सोज' एक राजनैतिक होने के साथ एक कलाकार भी थे। उन्होंने ललित कलाओं के विकास के लिए कला मंदिर की स्थापना की। इस संस्थान के द्वारा नाट्य–प्रशिक्षण के कई बार वर्कशाप का आयोजन किया गया। कला मंदिर के नाटक कारों के नाटकों का विभिन्न क्षेत्रों में दिल्ली, बम्बई, शिमला, इन्दौर, उज्जैन, जबलपुर आदि स्थानों में प्रदर्शन हुआ। सन् 1910 में माधवराव सिन्धिया ने ग्वाल्हरे संगीत नाट्य मण्डली की स्थापना की। इस संस्था के प्रमुख कलाकार सत्यव्रत सिन्हा, बृजमोहन शाह, रमेशचन्द्र उपाध्याय, कृष्णचन्द वर्मा आदि सभ्रांत और आभिजात्य वर्ग के लोग थे।

मुख्य शब्द : प्रेमचंद कश्यप 'सोज', रघुवीर प्रसाद और माँ हंसमुखी देवी, अभी दिल्ली दूर है, शहीदों की बस्ती, दिल्ली तेरी बात निराली, गहराइयाँ।

प्रस्तावना

व्यक्तित्व और कृत्तित्व मानव जीवन के दो पहलू हैं, जो एक दूसरे के संपूरक हैं। व्यक्तित्व के उतार–चढ़ाव, आरोह–अवरोह कृत्तित्व का मार्ग प्रशस्त करते हैं। मानव जीवन अपनी उन्नति के रास्ते स्वयं बनाता है, जिसके माध्यम से वह जीवन का निर्माण एवं सृजन करता है, उसे कृत्तित्व कहा जाता है। कृत्तित्व के कैनवास पर अपने जीवन के उतार–चढ़ाव और अनुभव के आधार पर चित्र को उकेरता है। उनमें व्यक्तित्व से कृत्तित्व के मानचित्र में रंग भरता है। उसी प्रकार प्रेमचंद कश्यप 'सोज़' व्यक्तित्व के रूप में कृत्तित्व में रंग भरते है। प्रेमचंद कश्यप एक साहित्यवेत्ता नृतक, नाट्य, रंगमंच, संगीतकार और कुशल वक्ता रहे। इन्हीं सर्वगुण सम्पन्न व्यक्तित्व का आकलन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रेमचंद कश्चप 'सोज़' हिन्दी–उर्दू के बड़े साहित्यकार और शायर रहे किन्तु आज हिन्दी जगत में उनकी पहचान उतनी नहीं है जितनी होनी चाहिए। अतः 'सोज़' जी के साहित्य को हिन्दी जगत में यथोचित्त स्थान प्राप्त हो सके,यही शोध का उद्देश्य है।

प्रेमचन्द कश्यप 'सोज़' का व्यक्तित्व

जिस प्रकार मानसरोवर में स्थित सहस्त्रदल जलज एवंनिरभ्र में नक्षत्र है, उसी तरह प्रेमचन्द कश्यप 'सोज़' है । प्रेमचन्द कश्यप को साहित्य, राजनीति और संगीत के प्रति विशेष रुचि थी, उन्हें तीनों विधाओं पर समान अधिकार था । वे शास्त्रीय संगीत, गीत,गज़ल को तरन्नुम में गाते थे, उनके सिनेमा–जगत के कई गायक कलाकारों से मित्रता थी । प्रेमचन्द को अभिनय, नाट्य सृजन में महारथ हासिल थी। हिन्दी उर्दू दोनों भाषाओं को जानने वाले प्रेमचन्द का व्यक्तित्व अविस्मणीय रहा है।

जन्म एवं परिवार

प्रेमचन्द कश्यप 'सोज़' का जन्म 14 नवम्बर सन् 1912 ई0 को खुर्जा में पिता श्री रघुवीर प्रसाद और मां हंसमुखी देवी के यहाँ हुआ । उनके पितामह श्री बाबू हर प्रसाद थे । उनकी रुचि वकालत के अतिरिक्त अन्य ललित कलाओं में भी थी । जिनका प्रभाव प्रेमचन्द कश्यप 'सोज' पर पड़ा। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे, जिससे उनका प्रभाव राजनीति, संगीत, नाट्य साहित्य, पर हुआ ।

शिक्षा

प्रेमचन्द कश्यप की शिक्षा–दीक्षा मामा श्री क्षरिका प्रसाद के यहाँ अलीगढ़ में हुई। प्रेमचन्द कश्यप मेधावी विद्यार्थी थे। उनके आर्थिक एवं सामाजिक संकटों में उन्होंने स्नातक परीक्षा अलीगढ़ विश्वविद्यालय में उर्दू विषय

में उत्तीर्ण की। इसके पश्चात एम. ए. अंग्रेजी में किया । बचपन में ही उन्होंने उर्दू के विभिन्न शायरों के दीवान और रसाले कंठस्थ कर लिये थे। उर्दू के ज्ञाता तथा काव्य–सृजन की प्रतिभा ने उन्हें शायर बना दिया। शायरी के कारण ही इनका उपनाम 'सोज़' रखा गया, जो अन्त तक जाना जाता रहा।

संगीत प्रेम

प्रेमचन्द कश्यप 'सोज़' ने संगीत कला का ज्ञान कलकत्ता में 1938–39 में प्राप्त किया। यहीं से संगीत विषय में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। वे बम्बई में फिल्म जगत में जाने के लिए उत्सुक थे। व्यवहार कुशल मितभाषी होने के कारण उनके सम्बन्ध संगीतकार शंकर जयकिशन, मुकेश, तलत महमूद और किशोर कुमार आदि से हो गए थे ।

संकीर्ण विचार धारा के विरोधी

प्रेमचंद कश्यप की वैचारिक पृष्ठभूमि संकीर्ण नहीं थी। उनके पिता हरप्रसाद और माँ हंसमुखी देवी ने सामाजिक कार्यों से बाहर जाने पर कभी अंकुश नहीं लगाया। उन्होंने अन्धविश्वास और कुप्रथा की जातीय बेड़िया तोड़कर विवाह किया व उपेक्षित जातियों को समान स्थान दिलवाने के सदैव पक्षधर रहे। प्रेमचंद के पारिवारिक सदस्यों में अन्तर्जातीय विवाह कर इस संकीर्ण विचारधारा को तोड़ एक नये युग का आरम्भ किया।

राजनीति

प्रेमचंद कश्यप की रुचि ललित–कलाओं के अतिरिक्त राजनीति में भी थी। उनकी राजनैतिक रुचि ही उन्हें पार्षद से लेकर विधायक तक चुनाव में प्रत्यार्शी के रूप में खड़ी करती है। प्रेमचंद के अभिन्न मित्र द्वारिका प्रसाद मिश्र, श्री श्यामाचरण शुक्ल, स्वर्गीय माधवराव सिंधिया आदि रहे।

प्रखर वक्ता

प्रेमचंद कश्यप 'सोज़' राजनीति के कुशल वक्ता थे। उनका लक्ष्य जनहित में कार्य करना था। शायर होने के कारण वे बीच–बीच में राजनीति और आम आदमी से संबंधित उर्दू के शेर भी प्रस्तुत कर देते थे। इससे उनकी वक्तृत्व कला का ज्ञात होता है।

कलामंदिर संस्थान के संस्थापक

प्रेमचंद कश्यप एक राजनैतिक होने के साथ एक कलाकार भी थे। उन्होंने ललित कलाओं के विकास के लिए कला मंदिर की स्थापना की। इस संस्थान के द्वारा नाट्य–प्रशिक्षण के कई बार वर्कशॉप का आयोजन किया गया। कला मंदिर के नाटक कारों के नाटकों का विभिन्न क्षेत्रों में दिल्ली, बम्बई, शिमला, इन्दौर, उज्जैन, जबलपुर आदि स्थानों में प्रदर्शन हुआ। सन् 1910 में माधवराव सिन्धिया ने ग्वाल्हरे संगीत नाट्य मण्डली की स्थापना की। इस संस्था के प्रमुख कलाकार सत्यव्रत सिन्हा, बृजमोहन शाह, रमेशचन्द्र उपाध्याय, कृष्णचन्द वर्मा आदि सभ्रांत और आभिजात्य वर्ग के लोग थे।

रचना संसार

प्रेमचंद के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके जीवन पर अंकित सामाजिक प्रभाव को सींचता है, उसके पश्चात वह अपने कृतित्व में मोतियों की लड़ी के समान रचना के द्वारा पिरो देता है।

प्रेमचन्द कश्यप 'सोज़' के व्यक्तित्व का प्रभाव पूर्णतः उनकी रचना–धर्मिता में पाया जाता है। उनके सृजन पर तीन प्रकार से ललित–कलाओं पर प्रभाव पड़ा पहला संगीत, दो नृत्य, तीन नाट्य साहित्य सृजन। 'सोज़' का प्रथम नाटक – 'अभी दिल्ली दूर है' में मिर्जा को राजनैतिक मुहरा बनाया।

''मौलवी : हाँ, मेरा मतलब ऐसा ही है। लेकिन कुछ फायदे के साथ और कुछ फायदा भी ऐसा हो जो घर बैठे मिल जाय। जानते हो गरीब आदमी की हजार मुसीबतों का इलाज है पैसा।''[1]

प्रेमचंद कश्यप 'सोज़' का दूसरा नाटक शहीदों की बस्ती में हिन्दू–मुस्लिम एकता को व्यक्त व्यक्त करता जिसमें कश्मीर में मुजाहिदों को पकड़ने तथा देश प्रेम को व्यक्त किया है।

करीमा– ''लेकिन, इंशाह अल्लाह, मैं एहले इस्लाम और काफिरों के बीच नफरत की वो दीवार खड़ी करूगाँ कि एक दूसरे को फूटी आँख न देख सकें।,,[2]

सोहनी–''लोहे की गर्म सलाखें (हसन बाबा की समाधि पर जाकर) यह मैं क्या सुन रही हूँ हसन बाबा (खुद से) नहीं–नहीं अगर माँ की जान बचाने के लिए भी मैं देश के साथ गद्दारी करूँगी तो वही माँ मुझे धिक्कारी, यह नहीं हो सकता।''[3]

'सोज़' का तीसरा नाटक 'दिल्ली तेरी बात निराली' में पुत्रों में हो रही जंग को प्रस्तुत किया। स्वतन्तत्रा, साम्प्रदायिक एकता और राष्ट प्रेम की भावना को इस नाटक में प्रस्तुत किया। जिसमें बहादुर शाह जफ़र की सत्ता के लिए और जीनतआरा के चरित्र का यथार्थांकन किया है। इस शासनकाल में केवल जीनत महल का ही हुक्म चलता था। असली हकदार दर–दर की ठोकरें खा रहे थे और उनके चमचे मजे कर रहे थे।[4]

दौलतः– महरौली के दंगल की तैयारियाँ हैं, मियाँ कौन है आज मैदान में?

अनवर : इस साल जरा टेड़ी खीर है, मामू डिबिया दौलत को देते हुए।

मिठाईवाला : ऐसा कौन तीस मार खाँ आ गया, अवध के नबावों से बढ़कर।

अनवर : जी इधर मिर्जा– फखरू हमारे शेरू को गोद ले बैठे और एलान फर्मा दिया, अगर शेरू हार गया तो बली अहदी का हक छोड़ देंगे।[5]

प्रेमचंद कश्यप के चौथे नाटक 'गहराइयाँ' में पिता– पुत्र के सामाजिक दृष्टिकोण एवं पारिवारिक दबाव को बहुत सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया।

राजेन्द्र : मुझे जो कुछ मालूम है, आपको बता चुका हूँ, मुझसे ज्यादा आपको खुद मालूम है।

शम्भुनाथ : खामोश! ये मत भूलो कि तुम यहाँ गवाह की हैसियत से बयान देने आये हो।

राजेन्द्र : पिताजी आपको खुद माधौ ने बताया था कि उसका कातिल कौन है ?

आप अपने आपको धोखा दे रहे हैं। आपकी आत्मा जानती है कि मैं सब सच कह रहा हूँ।[6]

शम्भूनाथ :– भाई देखो, नया जमाना है। वक्त गुजर गया, जब हमारी तुम्हारी शादी हुई थी। ब्याह रच गया, किसी

ने किसी को देखा नहीं, लेकिन आज की दुनिया में लड़की को पसन्द कर ले, यही सबसे बड़ी शर्त है।[7]

इसके अतिरिक्त कुछ अप्रकाशित नाटक जड़ाऊँ कंगन, गिरती दीवारें एवं चेहरे और मुखौटे आदि हैं। प्रेमचंद कश्यप 'सोज़' ने जीवन के यथार्थ के साथ युगीन यथार्थ और मानसिक रूप को नाटक मे रीति–नीति से निरूपित किया है। उन्होंने अपने नाटकों में साम्प्रदायिक एकता, देश प्रेम, पारिवारिक एवं सामाजिक गतिविधियों को विशेष रूप से महत्व दिया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने समन्वय, चुनाव प्रक्रिया, जाति धर्म वर्ण–वर्ग को भी नाटकों में प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद कश्यप 'सोज़' मुखर वक्ता, प्रवीण, राजनीतिक नाटककार और शायर थे। उन्होंने इन सभी पक्षों को अपनी जीवन काल में कुशलता से निर्वाह किया। वे नाटककार के साथ निर्देशक, अभिनेता थे। इसके लिए उन्होंने कला–मंदिर की स्थापना की थी। जहाँ पर वे अभिनेताओं को तैयार किया जाता है। प्रेमचंद कश्यप ने इस संस्था के तत्वावधान में कई नाटकों का विभिन्न देशों में मंचन किया था तथा उनके नाटक 'दिल्ली तेरी बात निराली' का प्रसारण दूरदर्शन, दिल्ली से दो से अधिक बार प्रसारित किया गया। उन्होंने अपने जीवनकाल में सात नाटकों में से चार नाटकों का मंचन किया – (एक) अभी दिल्ली दूर है, (दो)– गहराइयाँ, (तीन)– शहीदों की वस्ती, (चार)– दिल्ली तेरी बात निराली। इन कला कृतियों के द्वारा यह कार्य व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से किया है। उनके नाटकों का प्रदर्शन ही उनके साफल्य का सही प्रमाण है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अभी दिल्ली दूर है, प्रेमचन्द कश्यप 'सोज़',19–20 पेज
2. शहीदों की बस्ती, वही, 41 पेज
3. शहीदों को बस्ती, वही, 53 पेज
4. दिल्ली तेरी बात निराली, वही, 69 पेज
5. दिल्ली तेरी बात निराली, वही, 34 पेज
6. गहराइयाँ, वही, 164 पेज
7. गहराइयाँ, वही, 44 पेज